Environmental Protection and Social Work Profession

Editors

Dr Bijendr Pradhan **Dr Pushpa Mishra**
Mr Ankit Sharma **Dr Vikas Sharma**

Environmental Protection and Social Work Profession

[Proceeding with full Paper]

Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun (Rajasthan)

Indian Council of Social Science Research
Indian Council for Social Science Research (ICSSR), Delhi

Editors

Dr. Bijendr Pradhan
(Head and Associate Professor)

Dr. Pushpa Mishra
(Assistant Professor)

Mr. Ankit Sharma
(Assistant Professor)

Dr. Vikas Sharma
(Assistant Professor)

Co-editors

Mr. Ranjit Kumar Jaiswal
(Research Scholar)

Mr. Indra Ram Poonia
(Research Scholar)

Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan)

Environmental Protection and Social Work Profession

[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra

Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&igshid=1svv9176cp9a

Table of Contents

SL No.	Title	Name	Page No.
	Key-Note Address Environmental Protection and Social Work	Prof. R.B.S.Verma	15-23
	Environment Protection for Sustainable Development of Communities	Prof. A.N. Singh Dr.Geetanjali Srivastava	24-33
	Education Of Slum Children- Necessary Approach For Sustainable Societal Development	Dr. Pushpa Mishra Mr. Jagpal Singh	34-46
	Environmental Degradation and Social Work Competencies	Dr. Bijendr Pradhan Shashi Kant Srivastava	47-50
	Environmental Conservation Through CSR– Case Study of CSR Initiatives of a Public Sector Undertaking	Dr. Ashvini Singh	51-57
	Impact of Plastic on Environment and its Abatement using Social WorkProfession	Mr. Ankit Sharma Ms. Silvia Parasher	58-67
	Role of Government and Non-Government Organization in the Environment Protection and in the Development of the Rural India.	Dr. Amit Singh Rathore Dr.Chetan Sharma	68-76
	Social Work Profession's and Practice with Environmental Issues	Dr. Veena Dwivedi	77-83
	Environment and Sustainable Development	Dr. Manish Bhatnagar	84-87
10.	Volunteerism and role of Education for Environment Protection	Dr. Bhabagrahi Pradhan	88-91
	Environment Versus Sustainable Development	Sweety Verma Dr. Rajeev Verma	92-102
	Islamization: Concepts of Environmental Protection and Social Work	Saranyu Mhadsri	103-109
	Environmental Protection in Drought Affected Areas of Rural Rajasthan: A Community Engagement Perspectives	Dandub Palzor Negi Dr. Rajeev MM Abdul Azeez EP	110-116
	Environmental Education: The Upsurging Need for Mankind	Pravendra Singh Birla Pratishtha Kulshreshtha	117-124
	Role of Jal Saheli and Pani Panchayat for Rural Development of Bundelkhand : A Case Study of Parmarth	Dr. Muhammad Nayim	125-128

16.	Impact of ngo's in Environmental Protection	Jaseemul Farhan KP Hamid Mahswoom K Noorjahan CJ	129-134
17.	Migration Induced by Climate Change: Policies and Actions.	Kasib Ali	135-140
18.	Climate Change : A Global Threat and The Role of Social Worker	Dr. A. K. Bhartiya Samra Anwer	141-149-
19.	Exploring Innovations in Policy for Agriculture Bioinformatics and Cultivation of Scientific and Sustainable Skills in India	Diwakar Kumar	150-155
20.	Monoculture and polyculture impacts on biodiversity	Jiya Choudhary	156-162
21.	Environment protection & role of social workers	Gaurav Dixit	163-170
22.	Psychiatric Problems Of Elderly	Ambrish Kumar Rai	171-176
हिन्दी खण्ड			
23.	भगवान महावीर का पर्यावरण दर्शन	डॉ [illegible] प्रज्ञा	191-194
24.	प्रदूषण : एक गम्भीर समस्या	कु. [illegible] छात्रा	195-198
25.	वन संरक्षण में जनजातीय समुदाय की सहभागिता	डॉ [illegible] कृष्ण [illegible]	199-204
26.	पर्यावरण संरक्षण में समाज कार्य की पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. [illegible]	205-210
27.	ई–अपशिष्ट–एक पर्यावरणीय समस्या एवम उसका प्रबन्धन।	डॉ. विकास [illegible]	211-214
28.	पर्यावरण संरक्षण एवं वैश्विक राजनीति	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	215-220
29.	पर्यावरण संरक्षण और जन चेतना	डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़	221-226
30.	पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण शिक्षा एवं समाजकार्य कर्ता की भूमिका	डॉ. आभा सिंह	227-230
31.	पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा	डॉ. हेमलता जोशी	231-234
32.	जैनदर्शन और पर्यावरण–संरक्षण:एक अध्ययन	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	235-238

[illegible]	सतत विकास एवं समाज कार्य	रंजीत कुमार जायसवाल	239-244
[illegible]	मानव विकास के लिए शिक्षा – एक सशक्त माध्यम	डॉ. सरोज राय	245-248
[illegible]	वैदिक साहित्य में पर्यावरण	डॉ. अशोक भास्कर	249-252
[illegible]	पर्यावरण संरक्षण और हमारा विकास : जैनधर्म के सन्दर्भ में	डॉ. योगेश कुमार जैन	253-257
[illegible]	यौगिक जीवन शैली, सतत विकास और सामुदायिक स्वास्थ्य	डॉ. विनोद सिहाग	258-261
[illegible]	पर्यावरण संरक्षण संबंधित विधायी उपबंध एवं न्यायपालिका की भूमिका	डॉ. अनिला	262-266
[illegible]	जैनाचार में निहित पर्यावरण सुरक्षा के सिद्धान्त	डॉ. श्वेता जैन	267-270
[illegible]	पर्यावरण सम्बन्धी संवेदनशील मुद्दे एवं संरक्षण हेतु प्रयास	डॉ. बी.एल. जैन डॉ. अमिता जैन	271-274
[illegible]	समावेशी सूक्ष्म स्तरीय पर्यावरण नियोजन : दशा एवं दिशा	इन्द्रा राम पुनिया,	275-277
[illegible]	जैन दर्शन के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण व संतुलन	डॉ मनीषा जैन	278-282
[illegible]	पर्यावरण और यज्ञ	डॉ. निर्मला भास्कर, सहायक आचार्य	283-286
[illegible]	पर्यावरण संरक्षण में सतत विकास की भूमिका	जे. पी. सिंह डॉ. विष्णु कुमार	287-289-
[illegible]	जल–संरक्षण एवं पर्यावरण	राकेश कुमार जैन	290-296

पर्यावरण संरक्षण में सतत् विकास की भूमिका

जय प्रकाश सिंह
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान,
लाडनूं (राजस्थान)

डॉ. विष्णु कुमार,
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान,
लाडनूं (राजस्थान)

सारांश

पिछले कई दशकों से मानव प्रौद्योगिकी विकास के नाम पर अपनी धरती और उसके संसाधनों को नष्ट कर रहे हैं। अनजाने में अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के नाम पर और अधिक इसे बाधित करने की ओर अग्रसर हो गये हैं। आज बेहतर जीवन जीने का प्रश्न खड़ा हो गया है। मानव में प्रकृति एवं परिस्थिति के अनुसार सामंजस्य करने की कौशलता तो है फिर भी इसकी एक सीमा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद हम पहले ही इसकी सीमा पार कर चुके हैं जैसे– वनों की कटाई से कार्बनडाइ ऑक्साइड का असंतुलन होना, अधिक उपज के नाम से अत्यधिक उर्वरक या कीटाणुनाशकों का उपयोग किया जाना, औद्योगिकी के नाम पर खतरनाक अवशिष्ट पदार्थों का प्रयोग एवं विसर्जन सीधे जल में प्रवाहित किया जाना आदि अनगिनत उदाहरण हमारे जीवन में दिखते हैं अभी तक सही समाधान तक नहीं पहुंचा गया है। यदि इस समस्या की तरफ हमने ध्यान नही दिया तो आने वाली पीढी हमें माफ नहीं करेगी। इस विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण संरक्षण में सतत विकास की भूमिका शीर्षक के तहत अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रस्तावना

आज जो प्रकृति की दुर्दशा हुई है इसके पीछे मानव का ही हाथ है। अगर अब हम लोगों ने इस पर विचार नहीं किया तो आने वाली पीढ़ी के लिए खतरा होगा इस कारण पर्यावरण को सुरक्षित रखना होगा ताकि मानव पृथ्वी पर सदियों तक रह सकें। पर्यावरण संरक्षण– देश में पर्यावरण संरक्षण की वर्तमान स्थिति पर ध्यान देते हैं तो बड़ी खतरनाक तस्वीर बनती है आप किसी भी बड़े शहर को देख लीजिए, वहां बिजली की आपूर्ति, स्वास्थ्य, वाहनों की बढ़ती हुई संख्या संचार या अवशिष्ठ पदार्थों के प्रबन्धन आदि बड़ी समस्या बनती जा रही है। साथ ही अपने भोग विलास के निर्माण के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधूंध दोहन किया जा रहा है। पर्यावरण का संरक्षण करना किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि सभी व्यक्तियों का नैतिक कर्त्तव्य होना चाहिए। इसे न सिर्फ प्रत्यक्ष बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए। कुछ इस प्रकार से पर्यावरण को संरक्षण प्रदान कर सकते है– व्यक्तिगत वाहन के स्थान पर सार्वजनिक वाहन का प्रयोग करने से ध्वनि प्रदूषण कम होगा रासायनिक खाद की जगह जैविक खाद के प्रयोग से खेत की उर्वरता हमेशा बनी रहेगी। आवश्यकतानुसार लाईट, पंखे, कूलर एवं बिजली के उपकरणों का उपयोग करें, इससे ऊर्जा का संरक्षण हो सकेगा। अनावश्यक जल की बर्बादी न करके जैसे– दाढ़ी बनाते समय पानी का नल न खुला छोड़ें, वाहन धोते समय सीधे नल से पानी न डालें बाल्टी भर कर साफ करें आदि। पर्यावरण संरक्षण में छोटी–छोटी बातें ही हमें मजिल तक पहुंचाने में सहयोग करेगी।

संक्षेप में कह सकते हैं कि हमें प्रदूषण पर नियंत्रण, वनों की रक्षा एवं वन रोपण, खनिज संसाधनों का संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण आदि के द्वारा पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है।

सतत् विकास

साधारणतः सतत विकास एक ऐसी विकास की बात करता है जो निरन्तर वृद्धि की की ओर अग्रसर करता है। जैसे– यदि आप एक पेड़ को काटकर उपयोग कर रहे हैं तो पेड़ आप लगायी भी ताकि भविष्य

में पेड़ की उपलब्धता बनी रहे। अतः सतत् विकास ऐसे विकास की कल्पना है जिसमें वर्तमान से भविष्य तक हम सभी को मिल सकतने वाले साधनों का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयेाग की क्षमता हो। दूसरे शब्दों में, सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ी की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।

अर्थात् प्राकृतिक साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग के लिए सुस्थिर/सतत् जीवन शैली अपनानी होगी। सुस्थिर जीवन शैली से तात्पर्य स समुचित ामत्रा में साधनों की उपलब्धता के अनुसार प्राकृतिक साधनों का प्रयोग, दूरदर्शिता एवं पूरी समझ के साथ करना है।

आज का मानव अपने पर्यावरण का रचयिता एवं गढने वाला हो गया है किन्तु विकास की इस दौड़, व्यापारिकता और भौतिकता ने प्रकृति के साथ बहुत ज्यादा खिलवाड़ की है। इसीलिए आज हमें विनाश रहित विकास की आवश्यकता है। इसके लिए हर स्तर पर नागरिकों और समुदायों तथा सभी संस्थाओं को सार्वजनिक प्रयासों में न्यायसंगत भागीदारी निभानी होगी ताकि एक तरह से सकारात्मक सोच विकसित हो सके।

माना कि हमारे कस्बे में महानगरों के गुण आ गये हैं पर फिर भी यह पिछड़ा ही कहा जायेगा। जब तक की सामाजिक पर्यावरण के प्रति सचेत एवं जागरूकता में तरक्की नहीं कर लेता। जैसे– जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण एवं संसाधनों के सीमित उपयोग पर जागरूकता दिया जाये। शिक्षा प्रणाली में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप से सतत विकास को प्रत्येक विषय में शामिल किया जाना चाहिए। उपभोक्तावादी संस्कृति पर नियंत्रण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शाश्वत विकास को प्रोत्साहन हो। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाना चाहिए। सरकार को राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने एवं क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण में सतत् विकास की भूमिका

वर्तमान समय में सतत् विकास के द्वारा पर्यावरण संरक्षण इस प्रकार कर सकते हैं–

1. **प्रदूषण नियंत्रण**– प्रदूषण के कारणों को वैज्ञानिक तरीके से हल कर प्रदूषण नियंत्रित किया जा सकता है। जैसे– व्यक्तिगत वाहन की जगह सार्वजनिक वाहन या साइकिल का प्रयोग करके वायु प्रदूषण कम किया जा सकता है।
2. **वन सुरक्षा**– कम से कम पेड़–पौधें काटे जायें और उतने ही पौधें वापिस लगाये जायें। कागज या अन्य तरह के पेपर रिसाइकिल के रूप में उपयोग करने की जागरूकता फैलाकर कम से कम पौधे काटने की आवश्यकता होगी। साथ ही विभिन्न आन्दोलन द्वारा वन सुरक्षा भी की जा सकती है। जैसे– चिपको आंदोलन आदि।
3. **खनिज संसाधन**– खनिज सम्पदा सीमित है, इसकी जागरूकता हमें जन–जन तक लानी होगी और इसके उपयोग में बुद्धिमत्तापूर्वक एवं वैज्ञानिक ढंग से किये जाने पर जोर देना होगा। जैसे– कोयला, इसको आवश्यकतानुसार उपयोग लेकर इसे बुझाकर दोबारा से उपयोग लिया जा सकता है।
4. **ऊर्जा संरक्षण एवं वैकल्पिक स्रोत**– ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का शोध किया जाना चाहिए ताकि हमें जितनी जरूरत हो उतना उत्पादन किया जा सके। जैसे– सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा आदि।
5. **आर्थिक विकास में शाश्वत विकास की संकल्पना**– आर्थिक विकास आज जरूरी है लेकिन उद्योगों से निकलने वाले कचरे या अवशिष्ट पदार्थों को हमें सीधे नाले या नदी में न प्रवाहित करें। इसकी जगह वैज्ञानिक तरीके से उसे छानकर कम से कम प्रदूषण ही पानी में जाने दें। जहां तक हो सके किसी भी पदार्थ का ज्यादा से ज्यादा उपयोग में लिया जाये, इसे व्यर्थ न जाने दें।

उपर्युक्त बातों से शाश्वत विकास के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा की जा सकती हैं।

यह मत सोचो कि तुम्हारे लिए प्रकृति क्या कर सकती है अपितु अपने आपसे पूछो कि तुम प्रकृति के लिए क्या कर सकते हो? सतत विकास में लैंगिक समानता, अच्छा स्वास्थ्य, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के साथ–साथ पर्यावरण संतुलन भी निहित होता है। इसीलिए कहा जा सकता है कि

मानव का सही विकास तो सतत विकास के द्वारा ही हो सकता है। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा था– हमारे उद्योग मानव प्रधान होने चाहिए न कि मशीन प्रधान।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रघुवंशी, अरूण, एवं रघुवंशी, चन्द्रलेखा : पर्यावरण तथा प्रदूषण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल'4, संस्करण 1990, पृ. 322
2. रूहेला, एस.पी. : विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, संस्करण 2006, पृ. 592
3. सिड़ाना, अशोक : सामाजिक पर्यावरण अध्ययन, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2006, पृ. 396
4. गुप्ता, चांदमल एवं शर्मा रेणू : पर्यावरण शिक्षा, जयपुर, संस्करण 2007, पृ. 216
5. सिंह, भोपाल : पर्यावरण शिक्षा, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली, संस्करण 1999, पृ. 288
6. गोयल, एस.के. : पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2008, पृ. 467

7- सतत विकास पर निबन्ध– www.essay in hindi com>Essay>economics>sustanableDevelopment

❑❑❑